भारत के पहले डॉल्फिन रिसर्च सेंटर में निष्क्रियता

चर्चा में क्यों?

भारत में **डॉल्फिन संरक्षण को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है,** क्योंकि बिहार में स्थित नेशनल डॉल्फिन रिसर्च सेंटर (NDRC) **उन्नत उपकरणों और सक्षम मानव संसाधनों की कमी** के कारण उद्घाटन के महीनों बाद भी **कार्यरत नहीं** हो पाया है।

मुख्य बिंदु

- **उद्घाटन एवं वर्तमान स्थिति:**
  - **पटना में गंगा के निकट स्थित** NDRC का उद्घाटन 4 मार्च, 2024 को बिहार के मुख्यमंत्री द्वारा किया गया था।
  - इसके उद्घाटन के बावजूद, केंद्र अभी भी निष्क्रिय है, उपेक्षा का शिकार बना हुआ है और इसके काँच के दरवाजे बंद हैं।
- **डॉल्फिन संरक्षण पर प्रभाव:**
  - इस देरी के कारण भारत के राष्ट्रीय जलीय पशु, गंगा डॉल्फिन पर आवश्यक शोध में बाधा उत्पन्न हुई है।
  - **"भारत के डॉल्फिन मैन" आर.के. सिन्हा,** जिन्होंने 15 वर्ष पहले NDRC का प्रस्ताव रखा था, ने प्रगति की कमी पर निराशा व्यक्त की।
- **आधिकारिक आश्वासन:**
  - बिहार वन एवं मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक ने आश्वासन दिया कि NDRC वित्तीय वर्ष 2024-25 के भीतर परिचालन शुरू कर देगा।
  - केंद्र का **उद्देश्य डॉल्फिनों का संरक्षण करना, उनके व्यवहार और आवास का अध्ययन करना तथा** मछली पकड़ने के दौरान डॉल्फिनों की सुरक्षा के लिये मछुआरों को प्रशिक्षित करना है।
- **रणनीतिक स्थान और महत्त्व:**
  - 4,400 वर्ग मीटर में विस्तृत यह सुविधा पटना विश्वविद्यालय परिसर में गंगा के पास स्थित है, जहाँ **डॉल्फिनों को उनके प्राकृतिक आवास में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।**
- **संरक्षण चुनौतियाँ:**
  - भारत की 3,000 गंगा डॉल्फिनों में से आधे का निवास स्थान बिहार है, तथा निर्माण और प्रदूषण जैसी गतिविधियों के कारण **इनके आवासों को खतरा है।**
  - राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने हाल ही में भागलपुर में पुल के मलबे से डॉल्फिन की संख्या के प्रति उत्पन्न खतरे को उजागर किया है।
- **गंगा डॉल्फिन का महत्त्व:**
  - ये **लुप्तप्राय डॉल्फिन, जो दृष्टिहीन (Blind) हैं और इकोलोकेशन पर निर्भर हैं,** नदी पारिस्थितिकी तंत्र के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
    - इकोलोकेशन एक तकनीक है जिसका उपयोग **चमगादड़, डॉल्फिन और अन्य जानवर परावर्तित ध्वनि का उपयोग करके वस्तुओं का स्थान** निर्धारित करने के लिये करते हैं।
  - वे न्यूनतम धाराओं वाले गहरे जल में पनपते हैं और वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) के दिशानिर्देशों के तहत संरक्षित हैं।
  - 1801 में खोजी गई गंगा नदी डॉल्फिन ऐतिहासिक रूप से **भारत, नेपाल और बांग्लादेश में गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना और कर्णफुली-सांगु नदी प्रणालियों में निवास करती है।**
  - गंगा नदी बेसिन में हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि ये नदियाँ मुख्यधारा और **घाघरा, कोसी, गंडक, चंबल, रूपनारायण और यमुना जैसी सहायक नदियों में मौजूद हैं।**

//

गंगा डॉल्फिन

(Platanista gangetica gangetica)

तथ्य

- मीठे पानी में ही रह सकती हैं; गहरे पानी को ज़्यादा प्राथमिकता देती हैं
- सामान्यत: अंधी होती हैं; अल्ट्रासोनिक ध्वनि उत्सर्जित करके शिकार करती हैं
- पानी में साँस नहीं ले सकती; साँस लेने के लिये प्रत्येक 30-120 सेकंड में सतह पर आती हैं
- साँस लेने के दौरान निकलने वाली आवाज़ के कारण इन्हें 'सुसु' भी कहा जाता है

अधिवास एवं वितरण

- भारत, नेपाल और बांग्लादेश की गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में वितरित।
- भारत के 7 राज्यों असम, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में इनकी उपस्थिति देखी जा सकती है।

संरक्षण की स्थिति

- IUCN रेड लिस्ट: संकटग्रस्त (endangered)
- CITES: परिशिष्ट I
- भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972- अनुसूची-I

खतरे

- आवास की क्षति
- प्रदूषण
- बायकैच
- जलवायु परिवर्तन
- शिकार

संरक्षण संबंधी प्रयास

- प्रोजेक्ट डॉल्फिन (2021): प्रोजेक्ट टाइगर की तर्ज पर
- नेशनल डॉल्फिन रिसर्च सेंटर (2021): पटना विश्वविद्यालय (बिहार) में; भारत और एशिया का पहला
- समर्पित डॉल्फिन अभयारण्य:
  - विक्रमशिला अभयारण्य (बिहार) - 1991
  - हस्तिनापुर अभयारण्य (उत्तरप्रदेश) - प्रस्तावित

Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/inactivity-at-india-s-first-dolphin-research-centre